

Tharu Tribal Folk Art and the Identity of Indian Culture and Heritage (थारू जनजातीय लोक कला एवं भारतीय संस्कृति और विरासत की पहचान)

Jayvir Singh^{a*}, Dr. Gulabdhar^b

^a Research Scholar, Department of Painting, J.R.D.R. University, Chitrakoot, U.P.

^b Head, Department of Painting, J.R.D.R. University, Chitrakoot, U.P.6+-

^aEmail: jayvirartist444@gmail.com

Abstract

Our country is home to hundreds of tribes. Tribes exist in various regions of the country. The tribes of India mostly reside in forests or on mountains. Their lifestyle and culture introduce us to many sources of Indian tradition. One such tribe is the Tharu tribe, which lives in Uttar Pradesh, Uttarakhand, Bihar, and Nepal. The Tharu population is found in the Terai regions of Uttar Pradesh's Lakhimpur Kheri, Bahraich, Gonda, and Balrampur districts. The Tharu tribe mostly resides in dense forests. The art of the Tharu tribe is vast and extensive in itself and has preserved its artistic heritage. In folk art, the place that folk songs hold in folk literature, the same place is held by folk paintings in folk art. While words are dominant in folk songs, lines and colors are dominant in folk paintings. Dr. Prafulla Kumar Singh has called folk paintings "numeric folk expression" and has included murals, rangoli, alpana, chowk, mehndi, godna, and ritualistic figures under it.

हमारे देश में सैकड़ों जनजातियाँ निवास करती हैं। देश के विभिन्न अंचलों में जनजातियों का अस्तित्व है। भारत की जनजातियाँ अधिकांशता वनों में या पर्वतों पर निवास करती हैं। इन सब की जीवन शैली और संस्कृति भारतीय परंपरा के अनेक स्रोतों का परिचय हमें करती है। ऐसे ही एक जनजाति है थारू जनजाति जो कि उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार और नेपाल देश में निवास करती है। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोंडा और बलरामपुर जिले के तराई क्षेत्रों में थारूओं की आबादी पाई जाती है। थारू जनजाति का निवास अधिकांशतः घने जंगलों में पाया जाता है। थारू जनजाति की कला अपने आप में विस्तृत रूप में व्यापक है और अपनी कला विरासत को संरक्षित की हुई है। लोक कला लोक साहित्य में लोकगीतों का जो स्थान होता है वही स्थान लोक कला में लोक चित्रों का होता है। लोकगीतों में शब्द की प्रधानता होती है तो लोक चित्रों में रेखा-रंग की डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह ने लोक चित्रों को आंकिक लोकाभिव्यक्ति कहा है तथा भित्तिचित्र, रंगोली, अल्पना, चौक, मेहंदी, गोदना अनुष्ठानिक के आकृतियाँ आदि को इसके अंतर्गत स्वीकार किया है।

Keywords: Tharu Tribe, Folk Art, Indian Culture, Heritage, Mural Paintings, Dance, Handicrafts.

Received: 8/5/2025

Published: 8/31/2025

* Corresponding author.

हमारे देश में सैकड़ों जनजातियाँ निवास करती हैं। देश के विभिन्न अंचलों में जनजातियों का अस्तित्व है। भारत की जनजातियाँ अधिकांशतः वनों में या पर्वतों पर निवास करती हैं। इन सब की जीवन शैली और संस्कृति भारतीय परंपरा के अनेक स्रोतों का परिचय हमें कराती है। ऐसी ही एक जनजाति है थारू जनजाति जो कि ३०५०, उत्तराखण्ड, बिहार, और नेपाल

देश में निवास करती है। उ०प्र० के लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोंडा और बलरामपुर जिले के तराई क्षेत्रों में थारुओं की आबादी पायी जाती है। थारु जनजाति का निवास अधिकांशतः घने जंगलों में पाया जाता है।

थारु जनजाति की कला अपने आप में विस्तृत रूप में व्यापक है और अपनी कला विरासत को संरक्षित की हुयी है। लोक साहित्य में लोकगीतों का जो स्थान होता है वही स्थान लोककला में लोकचित्रों का होता है। लोकगीतों में शब्द की प्रधानता होती है। तो लोक चित्रों में रेखा – रंग की। डॉ० प्रफुल्ल कुमार सिंह ने लोकचित्रों को आंकिक लोकाभिव्यक्ति कहा है तथा भित्तिचित्र, रंगोली, अल्पना, चौक मेंहदी, गोदना आनुष्ठानिक आकृतियाँ आदि को इसके अन्तर्गत स्वीकार किया है। इस प्रकार थारु जनजाति कला जनमानस की भावनाओं की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। सामान्यतः लोककला एवं आदिवासी को लोग एक ही समझ लेते हैं। किंतु इन कलाओं में समानता होते हुए भी परस्पर मूलभूत अंतर है। आदिवासियों की कला में प्राकृतिक स्वच्छन्दता का आनन्द मिलता है। इसमें लचक होती है तथा नवीन संभावनाओं की भी आशा बनी रहती है। मुक्त अंकन होने के कारण आदिवासी कला के अभिप्राय सहज प्राकृतिक और सृजनात्मक होते हैं। आदिवासी कला में भाव गाम्भीर्य होता है। यह आत्मपरक और रहस्य की ओर अग्रसर रहती है। वही बाह्य सौन्दर्य का आकर्षण लोककला में होता है। लेकिन रचनात्मक पक्ष में ये जनजातीय कला से कम होती है।

कला ईश्वर का वरदान होती है। वह सीखी नहीं जाती है। मनुष्य के अन्दर स्वयं प्रस्फुटित होती हैं। यह विचार थारु जनजाति के लिए सही बैठते हैं। थारु पुरुष स्त्रियाँ अपने-अपने क्षेत्रों में विभिन्न कला विधाओं में निपुण हैं। इनकी कल्पना शीलता और मौलिकता से परिपूर्ण है। थारु जनजाति के लोगों ने किसी बाहरी संस्थान से जाकर प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया बल्कि उनके अन्दर कला स्वयं जाग्रत हुयी।

परिवार समाज ही इनका सखा गुरु होता है। जिस समाज परिवार में ये जन्म लेते हैं, पलते हैं और बढ़ते हैं। उसी समाज से ये स्वयं गुरु भी सीखते हैं। इनके लिए प्रशिक्षण लेने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती है। हालाँकि थारु जनजाति विकास की दृष्टि से काफी पिछड़ी रही है। लेकिन वर्तमान समय में यह काफी समृद्ध हो चुकी है। थारु समाज काफी कला प्रेमी होते हैं। इन्हें कलाएँ विरासत में प्राप्त हुयी हैं।

थारु जनजाति की विभिन्न कलाएँ-

1. **भित्ति चित्र** – थारु जनजाति कला में भित्ति चित्र थारु लोक संस्कृति का अभिन्न अंग है। एक धार्मिक अनुष्ठान के रूप में थारु भित्ति चित्र बनाये जाते हैं। विभिन्न त्यौहारों पर बनने वाले भित्ति चित्रों में भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव पर जो चित्र बनते हैं। वह महत्वपूर्ण हैं। जन्माष्टमी पर जो लड़कियाँ या औरतें वृत्त रखती हैं। उनके द्वारा चित्र बनाया जाता है। उपवास के एक दिन पहले वृत्तधारी लड़कियाँ और औरतों द्वारा दीवार को मिट्टी से लीप दिया जाता है। जिस पर पहले से भित्ति चित्र बने रहते हैं, उपवास के दिन नये भित्ति चित्र बनाये जाते हैं और उन्हीं भित्ति चित्रों कि पुजा अर्चना कि जाती है। कृष्णाष्टमी के रोज बने हुये ये भित्तिचित्र साल भर तक रहते हैं। इन दीवारों को लोग पवित्र स्थल मानते हैं। साल भर बाद पुराने भित्ति चित्र को मिटाकर नये भित्ति चित्र का लेखन और पुजन अर्चन होता है। भित्ति में श्री कृष्ण चित्र के अतिरिक्त कृष्णलीला के चित्र सृजित किये जाते हैं। इसके अलावा घोड़े, हाथी, पेड़-पौधे और फूल पत्तियों का भी चित्रांकन होता है। भित्तिचित्र बनाने से पूर्व साफ सुथरी दीवार को चूने के गाढ़े उजले रंग से पेन्ट कर दिया जाता है। उजले रंग के सुख जाने के बाद उस पर भित्ति चित्र अंकित किये जाते हैं। भित्ति चित्रांकन के लिये साधारण रंग को गाढ़ा घोलकर खौला दिया जाता है। धुले हुये रंग को किसी कप या कटोरी में रख दिया जाता है, और उस में 'पोई' नाम की लता के पत्ते का रस निचोड़ कर मिला दिया जाता है। तत्पश्चात पतली लकड़ी और कपड़े के टुकड़े से बने हुये ब्रश से भित्ति चित्र का लेखन होता है। ये चित्र बहुत ही चमकीले होते हैं और कई वर्षों तक फीके नहीं पड़ते थारु संस्कृति की

इस कला का अब लोप होता जा रहा है। यद्यपि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वृत्त सर्वत्र विद्यमान है, किन्तु बहुत ही कम परिवार इस कला को अभी तक साकार करते आ रहे हैं।

2. नृत्य कला और संगीत कला

थारू जनजाति में लोग विभिन्न पर्व, त्यौहारों और अवसरों पर संगीत और नृत्य का आयोजन करते हैं। होली के त्यौहार पर थारू जनजाति के लोग होली के दूसरे दिन जहाँ होली जलाई जाती है, वहाँ जाकर स्त्री-पुरुष और बच्चे एक दूसरे को होली की धूल से टीका लगाते हैं। साथ ही प्रत्येक वर्ष जहाँ होली जलती है, वहाँ पर एक पेड़ लगाया जाता है। टीका लगाने के बाद सभी लोग गाँव आने पर सामूहिक रूप से नृत्य और संगीत का आयोजन करते हैं। इस विशेष त्यौहार पर स्त्रियाँ और बच्चे सुन्दर और आकर्षक आभूषण, परिधान स्वयं की बनाई हुयी पोशाक " " को पहनती है। "दुबरी" सोहर झमटा जाटा गाया जाने वाला लोक प्रचलित है।

अन्य कला

जाटिन" थारूओं में खेला एवं हस्त कला थारू औरतें हस्तकला में भी निपुण होती हैं। वे हाथों से ही सुन्दर दस्तकारी कर लेती है। रुमाल, तकिया, पंखा परदा, टेबुल आदि में सुन्दर फूलों की कसीदाकारी हाथ से ही कर लेती है। वे हाथ द्वारा ही विभिन्न डिजायन की स्वेटर की बुनाई बखुबी कर लेती हैं। साथ ही भिन्न-भिन्न रंगों डिजाइनों की गुलदस्ता बनाने में भी पारंगत होती है।

सार

उत्तर भारत के हिमालय की तलहटी में निवास करने वाली थारू जनजाति उ०प्र०, उत्तराखण्ड, बिहार के पश्चिम चम्पारण और नेपाल देश में पायी जाती है। कला की दृष्टि से इसका अपना स्थान है। आदिवासी घने जंगलों में इसका निवास रहा है। कला इस जाति की विरासत रही है। लोक संस्कृति महत्व को स्थान दिया है। कलाओं में भित्ति चित्रण, संगीत कला, नृत्य कला, हस्तशिल्प प्रमुख रूप से इसकी विशेषता रही है।

निष्कर्ष

भारतीय लोक संस्कृति में लोककलाओं का हमेशा से ही बड़ा महत्व रहा है। आदिवासी जनजाति समाज ने अपनी मौलिक रचना से समाज को संस्कृति और कला की पहचान से अवगत कराया। उ०प्र० के लखीमपुर खीरी बहराइच और बलरामपुर के तराई क्षेत्रों में निवास करने वाली यह जाति अपने कला अस्तित्व को बचाये रखी हुयी है। आज भी थारू जनजाति अपनी कला की पहचान बनाने के लिए प्रयासरत है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची-

1. कुमारी डॉ०, नमृता-"थारू लोक कला की विरासत"
2. रघुवंशी दीपा सिंह, 'साक्षी' (अवध की थारू जनजाति संस्कार एवं कला)
3. पाण्डेय सुभाष चन्द्र "भारत-नेपाल के थारू जनजाति की आय व रोजगार का अध्ययन"
4. गौतम डॉ० रीता, 'थारू जनजाति के सामाजिक परिवेश एवं मौलिक अधिकार का विप्लेषणात्मक अध्ययन"
5. वर्मा निवेदिता "जनजातीय संस्कृति"

6. कुमार श्रीवास्तव सुरेन्द्र "थारू लोकगीत"
7. राय पारसनाथ, राय सी०पी० "अनुसंधान परिचय"
8. यादव नरेन्द्र सिंह, यादव अजय "कला के नवीन स्वरूप"
9. सिंह योगेन्द्र "भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण"
10. अग्रवाल वासुदेवशरण "कला और संस्कृति"
11. दुबे प्रकाशचन्द्र "थारू एक अनूठी जनजाति (सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन)"
12. कला और संस्कृति " अग्रवाल वासुदेव शरण
13. संस्कृति के चार अध्याय" दिनकर, रामधारी सिंह
14. सिन्हा शेखर कुमार कथन दुबे प्रकाश चन्द्र "थारू एक अनूठी जनजाति"
15. रिसर्व, एच०एच० (1891) "ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स इन बंगाल